

Industrial Psychology

B.A. (Hons) Part-III

Paper-VII Group (A)

By - Dr. Ramendra Kumar Singh.

Assistant Prof & HOD

Deptt of Psychology

S.K. College, Dumraon (Buxar)

VK SU, Ara

(1)

प्रश्न:- वैज्ञानिक प्रबन्धन के आलोक में गिलब्रेथ की योगदान का वर्णन करें (Describe Gilbreth Contribution in light of Scientific Management.)

औद्योगिक मनोविज्ञान में वैज्ञानिक प्रबन्धन के तहत 'समय एवं गति' के अध्ययन को विशेष महत्व प्राप्त है। पारम्परिक अर्थ में औद्योगिक क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों का प्रवेश 'समय एवं गति' के अध्ययन से ही हुआ है। इसका मूल उद्देश्य ध्रम, समय तथा शक्ति के अपव्यय को रोकना तथा उत्पादन में वृद्धि लाना था। समय एवं गति के अध्ययन से हम यह जान पाये शरीर के विभिन्न अंगों को काम के दौरान किस प्रकार संचालित की जाए कि कम से कम परिश्रम में अधिक से अधिक काम को सम्पन्न किया जा सके। इस प्रकार 'समय' का अर्थ किसी कार्य को सम्पादन करने में लगा श्रम से है तथा 'गति' का अर्थ उस कार्य को सम्पादन करने में लगी शारीरिक क्रियाओं से है। इसे परिभाषित करते हुए एलम ने कहा है:-

"In time studies the emphasis is on determining the standard time required to complete a task. In motion studies the methods motions and movements of the workers are analysed."

वैज्ञानिक प्रबन्धन का जनक रफो डब्ल्यू टेलर को माना जाता है। इस सिद्धान्त को पति-पत्नी गिलब्रेथ ने और अधिक परिमार्जित करके वैज्ञानिक रूप देने का प्रयास किया और इसका नाम थर्नलिंग रखा। थर्नलिंग वास्तव में 'गिलब्रेथ' शब्द का उल्टा रूप है। इसके तहत यह देखा कि किसी काम के दौरान 'समय' को उचित स्थान पर रखने से शरीर को कम गति करनी पड़ती है जिससे अफावत कम होती है और काम का निष्पादन जल्द हो जाता है। उन्होंने इस संदर्भ में एक प्रयोग ईंट जोड़ने वाले कामगारों पर किया और

और पाया कि पहले जो मजदूर 120 ईंटे जोड़ते थे शर्बलिंग का शहरा लेने पर 350 ईंटे जोड़ने लगे। इसी तरह पहले वही काम करने में 18 शारीरिक गतिधों करनी पड़ती थी जो इस सिद्धान्त को अपनाने के बाद मात्र 05 शारीरिक गतिधों करनी पड़ी। निष्कर्षतः यह देखा गया कि वैज्ञानिक प्रवर्धन यानि सम्यक् एवं गति सिद्धान्त को लागू करने के बाद कम मेहनत में अधिक उत्पादन होने लगा। कुल उत्पादन में 280% तक की वृद्धि देखी गई।

टेलर की वैज्ञानिक प्रवर्धन में मनोवैज्ञानिक पक्षों की अनदेखी की गई थी। अधोगतिधों का अधिक मुनाफा हो रहा था। इसकी तुलना में मजदूरों को लाभ तो हुआ पर उतना नहीं जितना के वे उकदार थे। इसलिए वे लोग नाराज थे। गिलब्रेंथ ने टेलर के सिद्धान्त को और अधिक वैज्ञानिक प्रदान की और कल्याणकारी रूप देने का प्रयास किया क्योंकि उनकी पत्नी एक मनोवैज्ञानिक थी और गिलब्रेंथ भी डॉक्टर थे। गिलब्रेंथ ने अपने सिद्धान्त में नौ खालों पर जोर दिया था जिसे अपनाकर कुशल प्रवर्धन किया जा सकता है।—

- (i) वैयक्तिकरण (Individualization)
- (ii) सम्पादन (Functionalization)
- (iii) मापन (Measurement)
- (iv) विश्लेषण एवं संश्लेषण (Analysis & Synthesis)
- (v) प्रमाणीकरण (Standardization)
- (vi) लेखा एवं कार्यक्रम (Records & Programmes)
- (vii) शिक्षण (Teaching)
- (viii) प्रलोभन (Incentive)
- (ix) कल्याण (Welfare)

इस क्षेत्र में गिलब्रेंथ का प्रयोग काफी सहायनीय एवं सफल रहा। गिलब्रेंथ ने एक दुहरा अध्ययन गतिधों को परिमार्जित करके किया और इसे शर्बलिंग नाम दिया। इसमें कार्य की गतिधों को विभिन्न अवयवों में बाँट दिया गया और प्रत्येक अवयव के लिए एक अंकित निर्धारित किया जिसे शर्बलिंग कहा, जो वास्तव में उसके नाम का उल्टा अक्षर था। उन्होंने बताया कि प्रत्येक काम के विभिन्न भागों को जिसको सम्पादन करके काम को आसानी से पूरा किया जा सकता है। इस तरह गिलब्रेंथ ने अपनी पत्नी के सिद्धान्त को सलाह

गिलब्रेथ ने टेलर द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक प्रवर्धन में कुछ उसी सुधार लाकर मनोवैज्ञानिक पद्धतियों को समावेश किया और मानवीय पक्ष पर जोर दिया। इन्होंने किसी भी कार्य को सम्पादित करने में लगाने वाले अनावश्यक शारीरिक गतियों (Motion Study) को नियंत्रित करने का प्रयास किया। हालाँकि यह सिद्धांत भी दोषमुक्त नहीं है। इसीलिए मैगिशान ने इस क्षेत्र में गिलब्रेथ की कमियों को दूर करने के लिए व्यवहारिक पक्ष पर जोर दिया। अतः यह Time & Motion Study वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारिक पक्षों का सम्मिश्रित रूप बन गया। गिलब्रेथ के सिद्धांत के निम्नलाभ पद पक्ष हैं। —

(1) प्रत्येक कार्य को सम्पादित करने के लिए कुछ सही तरीके होते हैं जिन्हें आपताकर कर्मचारियों को अनावश्यक धक्का से बचाता संभव है।

(2) प्रत्येक कार्य के लिए केवल उचित गति का ही चयन किया जाता चाहिए।

(3) कोई भी कर्मचारी dull minded नहीं होते हैं। उन्हें Incentive आदि के माध्यम से उत्साहित करके मोत्साह प्रदान होगा।

(4) उत्साह से किये गये कार्य में उत्पादन उच्चकोटि के होते हैं।

(5) औजार को उचित एवं नियंत्रित जगह पर रखकर उसको स्वयंसेवक में लगाने वाली व्यर्थ गतियों को नियंत्रित किया जा सकता है।

(6) प्रशिक्षण द्वारा कर्मियों को शिक्षा देना उप

(6) काम में देने का प्रयोग लाभप्रद होगा है। इसके लिए प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था होती चाहिए।

पर प्रत्येक काम को 17 भागों में बाँटा और काम के प्रत्येक भाग को आसानी से पूरा करने की शलाक दी। इसे एक उकाइरा द्वारा संभाला जा सकता है। जैसे मान लिया जाए कि किसी व्यक्ति को इस्ताकार करनी है तब उसे लिये कलम ढूँढना (Search) है। उसके बाद कलम पाना (find) है। अगर उसके पास शक से अधिक कलम है तो उसमें से चुनाव (Selection) करना है फिर कलम को उठाना है (Transport) है। उसके बाद एक जगह से दूसरे जगह (Transfer) करना है और अंत में इस्ताकार करना है। इस प्रकार प्रत्येक काम को Gilbreth ने 17 भागों में बाँटा और प्रत्येक के लिए एक संकेत चिह्न दिया। इसे ही Thimbiling कहा गया।

उस प्रकार गिलब्रेथ ने आपने पेशियों के माध्यम से यह साबित किया कि उपयोगों में वैज्ञानिक प्रणालियों को लागू करने से उत्पादन की मात्रा में काफी वृद्धि होगी है। साथ ही साथ समय एवं गति की वचन होगी है। मानविक एवं मनदुर दोनों के लिए लागू प्रद है। गिलब्रेथ ने आपने सिद्धान्त में बताया कि संकेत चिह्न के सहारे कैसे कम शारीरिक क्रिया या गति द्वारा अधिक उत्पादन लिया जा सकता है। उन्होंने टेलरवाद के वैज्ञानिक पक्ष में मनोवैज्ञानिक पक्ष को सामंजित करके और लागू प्रद बना दिया। इसी छड़ी में आगे चलकर मोजेसन (Mogenson) ने और सुधारकर व्यावहारिक पक्ष पर बत दिया और उसकी कमियों को दूर कर दिया।

रमेश कुशिरा
11.07.2020
डी०ने०आर०
इंसाईन